M.A - III SEMESTER · CC-12

अपभ्रंश प्राकृत साहित्य
इकाई - 3. णायकुमार - चरिउ - पुष्पदंत

Que: पठित अंश के आधार पर धण्ण कुमार चरिउ का सारांश लिखें।

उत्तर: — महाकवि रइधूकृत "धण्णु कुमार चरिउ" एक पौराणिक काव्य है। कवि ने इस काव्य मे पात्रो के नामों की कल्पना इस रूप मे की है जिससे उनके नाम लेते ही तत्काल उनका अर्थ बोध हो जाता है। इसमे वर्णित धण्ण कुमार, कृत पुण्य, अकृतपुण्य, भोगवती, प्रभृति इस प्रकार के नाम है जिनमे नादतत्व तो सम्मिलित है ही पर साथ ही उनके गुण और स्वभाव नीहित है। काव्य का नायक धण्ण कुमार वस्तुतः धन्य का ही कुमार है उसके नाम से ही संतुष्ट है कि उसके दर्शन करते ही सैकड़ो विघ्न बाधाएं समाप्त हो जाती है और वैभव कल्याण सम्बन्धी जितनी भी सिद्धियां है वे स्वयं उसके पास उसी प्रकार चली आती है जिस प्रकार नदी और नाले समुद्र को प्राप्त होते है।

धण्ण कुमार चरिउ मे वर्णित प्रथम दो संधि पाठ्यक्रम का विषय है। काव्य के प्रारंभ मे महाकवि रइधू ने सर्वप्रथम भगवान महावीर को नमस्कार कर भट्टारक सहस्त्र कीर्ति के पश्चात भट्टारक गुण कीर्ति को अपने गुरु के रूप मे स्मरण किया है। विपुलमती को प्रकाश देने वाली सरस्वती देवी को भी कवि ने बड़े ही नम्र भाव से नमस्कार किया है। तत्पश्चात गुणकीर्ति के अनुरोध किये जाने पर कवि "धण्ण कुमार चरिउ" के चरित पध्डियाबन्ध मे रचना की।

काव्य को अवगाह गति प्रदान करने के निमित्त से कवि उज्जैनी नगरी तथा वहाँ के राजा का वर्णन कर वहाँ के सेठ श्री दत्त तथा उसकी पत्नी लक्ष्मीवती का वर्णन किया है। उसके सुरवल्लभ, देविल, सुरनंदन, सुचन्द, धण्णदत्त, धनेश्वर एवं धनउ नामक सात पुत्र थे। आठवा पुत्र जब गर्भ मे आया तब उसकी माँ को दोहद हुआ। जिसकी पूर्ति श्री दत्त ने मनोकूल इच्छानुसार की। शुभ मुहूर्त एवं शुभ तिथी के अनुसार सर्व गुण सम्पन्न धण्ण कुमार नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जिससे सम्पूर्ण नगर फूला नही समाया। जब यह बालक आठ वर्ष की अवस्था को प्राप्त किया तब माता लक्ष्मीवती तथा पिता श्रीदत्त ने गुरु के पास पढ़ने के लिए भेजा। गुरु ने प्रथम मात्रा से व्यंजन आदि अक्षर ज्ञान से अवगत कराकर संस्कृत, प्राकृत एवं देशी भाषाओं का परिपूर्ण ज्ञान तथा शास्त्रो में गणित लक्षण अलंकार विधि, लिंग आदि भेद संधि, समास भाषा तर्कशास्त्र मंत्र-तंत्र औषधि गन्धर्व, वेदविद्या, संगीत

कला, हाथी घोड़े की सवारी आदि समस्त विद्याओं को अल्प समय में ही ग्रहण करा दिया।

इसके उपरान्त अपने गुरु एवं रचना प्रेरक के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए कवि ने धण्णकुमार के सौन्दर्य एवं लोकप्रियता की प्रशंसा की है। अपने माता-पिता का सर्वाधिक प्रेम एवं सर्वत्र प्रशंसा सुनकर धण्ण कुमार के बड़े भाई धण्ण कुमार से ईर्ष्या करने लगे। माता-पिता से धण्णकुमार की झूठी निन्दा करते तथा उसे कमाने के लिए प्रेरित करने लगे। यह कहते हुए कि धण्णकुमार बड़ा हो गया है उसे भी व्यापार में परिश्रम करना चाहिए। माता-पिता ने उन भाइयों के हृदय भावनाओं को जानकर तथा उत्तम शिक्षाएं देकर सर्वप्रथम धण्ण कुमार को पाँच सौ दिनारे देकर व्यापार निमित्त भेज दिया।

धण्ण कुमार बाजार में पहुँचकर सर्वप्रथम पाँच सौ दिनारों में एक ईंधन वाली बैलगाड़ी खरीदी। इसे देखकर इसके भाइयों ने काफी उपहास किया। किन्तु धण्ण कुमार चुप रहा। इसी बीच एक भैंस वाले ने धण्णकुमार से अपने भैंस खरीदने की प्रार्थना की तब धण्ण कुमार विह्वल होकर अपना ईंधनवाली बैलगाड़ी उसे देकर उसकी भैंस ले ली। उसी समय उसने पलंग के चारपायों को लिए हुए एक उदासीन मानव को बैठे हुए देखा और उससे उसका मूल्य पूछा। उसके मूल्य के अनुसार अपनी भैंस को दे दिया, और उसके बदले में चारों पायों को ले लिया। घर आकर, धण्णकुमार ने माँ से व्यापार सम्बन्धी सारी घटनाओं की जानकारी दी तब माँ ने उसे प्रसन्न होकर धण्ण कुमार को उच्च आसन देकर तिलक किया।

तत्पश्चात् धूल भरे उन पलंग के पायों को जब धोया गया तब उनमें से एक पत्र के साथ पाँच प्रकार के बहुमूल्य रत्न निकले। जिसे देखकर उसके सभी भाई आश्चर्यचकित रह गये तथा उनकी माँ अत्यन्त प्रसन्न होकर अपने पति को सारा समाचार से अवगत करायी। पिता उस पत्र एवं रत्नों को राजकीय सम्पत्ति मानकर उसे राज दरबार में ले गये। जब राजा ने उस पत्र को पढ़ा तो उसमें लिखा था कि - "इस नगर के नीति परायण राजा ने अपने घर के भीतर कलशों में सम्पदा भर कर रखा है।" इस समाचार को पढ़कर राजा अत्यन्त आश्चर्य चकित हो गया तथा धण्णकुमार की भूरि-भूरि प्रशंसा की राजा ने तत्काल ही उसे पत्र के अनुसार राज्य सम्पत्ति देकर आदर सहित विदा किया।

इस प्रकार जैन कथा साहित्य का एक प्रधान स्थापत्य कदलीस्तंभ स्थापत्य है। जिसके प्रत्येक छिलके एक

दूसरे पर आरूढ रहते हैं और दीपक जाने पर एक पतंगे की तरह निकलती हुई दृष्टिगोचर होती है। इसके जन्म जन्मांतरों की कथा वर्णित करते हुए कवि उद्देश्य सिद्धि प्राप्त करता है। जैन कथा साहित्य में इहलोक और परलोक भावना को दर्शाने के लिए जन्म जन्मांतरों की कथा को सम्यक् रूप से प्रतिपादित किया गया है।

Scanned with CamScanner